मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, वन्दे तद्गुणलब्धये।।
तत्त्वार्थ-सूत्र ग्रन्थराज में चतुर्थ अध्याय के माध्यम से देवों का वर्णन चल रहा है। भवनवासी, व्यन्तर देवों का वर्णन आपको बताया जा चुका है, क्रम प्राप्त ज्योतिषी देवों का वर्णन प्रारम्भ हो रहा है।

Class 10

ज्योतिषी देवों का वर्णन
ज्योतिषी देवों के विषय में

- कौन-से देव होते हैं जो ज्योतिषी देव कहलाते हैं?
- कौन से देव लोक में इन भवनवासी और व्यन्तर देवों से पृथक अपना स्थान रखते हैं?
- वह ज्योतिषी देव कहाँ पर स्थित होते हैं?

इन सबका वर्णन सूत्र और उनकी टीकाओं के माध्यम से किया जाता है। सूत्र पढ़ते हैं-

ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ-ग्रह-नक्षत्र-प्रकीर्णक-तारकाश्च।।**4.12**।।
'ज्योतिष्काः' यानि ज्योतिषी देव, 'ज्योतिष' शब्द ही अपने आप में इस बात को बताता है कि जो प्रकाश, आभा से युक्त होते हैं, वे सभी पदार्थ ज्योतिर्मय पदार्थ कहलाते हैं। इसी तरीके से इन देवों का यह ज्योतिष्क नाम इसलिए प्रसिद्धि को प्राप्त है क्योंकि इनके जो विमान आदि होते हैं,

- वे विशेष आभा वाले होते हैं,
- विशेष प्रकाश वाले होते हैं।

और यह ज्योतिषी देवों का संचार हमें जो समझ में आता है या दिखाई देता है, वह जितना भी ज्योतिष मण्डल आकाश में हमें दिखता है, वह सभी ज्योतिषी देवों का विमान और ज्योतिषी देवों के रहने का स्थान ही होता है।

आकाश में दिखाई देने प्रकाशित चीजें ज्योतिषी देवों के विमान हैं।

बताया जा रहा है सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र और प्रकीर्णक तारे, ये सभी क्या कहलाते हैं? ये सभी ज्योतिषी देव कहलाते हैं। सोचने की बात यह है कि सूर्य-चन्द्रमा ज्योतिषी देव हैं या सूर्य-चन्द्रमा के जो विमान हैं, वे ज्योतिषी देव हैं? सूर्य-चन्द्रमा के जो विमान हैं, वे तो आपको दिखाई देते ही हैं। जो भी उनकी आकृति हमें दिखाई देती है, जितना भी उनका स्पष्टीकरण हमारे लिए आँखों के गोचर होता है, वह सब तो हमें जो दिखाई दे रहा है, वह उन ज्योतिषी देवों के विमानों का बाह्य आकार है। कैसा? बाह्य आकार। आप एक कल्पना करें कि कोई गोल चीज हो, बिल्कुल तरबूज नुमा, गेन्द नुमा और उस गोल चीज के दो भाग करें बीचों-बीच से, अर्धगोला जिस आकृति का बन जाता है, उसी आकृति के ये देव विमान होते हैं। इन विमानों का जो यह निचला surface है, वह तो हम लोगों को दिखाई देता है लेकिन उनका जो ऊपरी surface है, उस पर उन देवों के विमानों के ऊपर वह उनके बड़े-बड़े आवास बने हुए रहते हैं। उन देवों का यहाँ पर वर्णन किया जा रहा है।

ज्योतिषी देवों का निवास मध्यलोक में है

ये देव, अगर आपसे पूछा जाए, किस लोक में पाए जाते हैं? अधोलोक भी है, मध्यलोक भी है और उर्ध्वलोक भी है। आप यह समझेंगे कि ये उर्ध्वलोक में पाये जाते हैं। जबकि एक बार आपको यह वर्णन करते हुए बताया था कि सुमेरू पर्वत की जितनी ऊँचाई है, उस ऊँचाई के बराबर पूरा मध्यलोक माना जाता है और सुमेरु पर्वत की जो ऊँचाई है, वह एक लाख योजन की है। कितनी? जम्बूद्वीप का जो पूरा चौड़ाई है, व्यास, वह भी एक लाख योजन का है और सुमेरु पर्वत की जो ऊँचाई है, वह भी एक लाख योजन की है। उस एक लाख योजन के ऊँचाई में, ये जो ज्योतिषी देवों के विमान होते हैं, ये बहुत उसकी अपेक्षा से नीचे होते हैं। इसलिए जहाँ तक यह सुमेरू पर्वत की ऊँचाई बताई गई है, वहाँ तक यदि मध्यलोक है, तो ये ज्योतिषी देवों के विमान तो उससे बहुत नीचे रह जाते हैं, इसी से स्पष्ट किया जाता है कि ये सभी एक तरह से देखा जाये तो ये मध्यलोक के ही भाग या मध्यलोक का ही इनका स्थान कहा जाएगा।

एक राजू प्रमाण तिर्यक रूप फैले पूरे मध्यलोक के असंख्यात द्वीप-समुद्रों में ज्योतिषी देवों का अवस्थान/निवास हैं।

यदि हम दो लोक माने केवल अधोलोक और उर्ध्वलोक तब तो यह उर्ध्वलोक में आ जाएँगे। लेकिन यदि हम अधोलोक के साथ मध्यलोक भी गिनते हैं और मध्यलोक की जो रचना के अनुसार, अगर हम उसकी ऊँचाई एक लाख योजन की मानते हैं तो इन ज्योतिषी देवों का अवस्थान उस मध्यलोक में ही गिना जाएगा। ये ज्योतिषी देव इस मध्यलोक से लेकर के पूरे जितने भी आपको असंख्यात द्वीप और समुद्रों के बारे में बताया था, सभी द्वीपों में, सभी समुद्रों में यह ज्योतिषी देवों का फैलाव है। पूरा जो मध्यलोक में तिर्यग्लोक का जो आपको विस्तार बताया था, वह एक राजू प्रमाण था। पूरे एक राजू में ये ज्योतिषी देवों के विमान सभी के, चन्द्रमाओं के, सूर्यों के, ग्रहों के, तारों के फैले हुए हैं यानि कि असंख्यात द्वीप-समुद्रों में, इन्हीं ऊँचाइयों पर जो यहाँ आपको अभी ऊँचाई बताएँगे, उतनी ऊँचाई पर, ये चन्द्रमा आदि सभी ज्योतिषी देवों के विमान फैले हुए हैं। इससे यह जानना कि जो ज्योतिषी देव हैं, वह एक, दो, चार, दस, बीस लाख नहीं है, असंख्यात द्वीप-समुद्रों में प्रकाश करने वाले, असंख्यात द्वीप समुद्रों तक फैले हुए, ये असंख्यात संख्या में हैं।

ज्योतिष लोक के बारे में विज्ञान की अनिश्चितता**(uncertainty)**

सुन रहे हैं? आए दिन हम सुनते रहते हैं, कभी-कभार news भी आती रहती है, वैज्ञानिकों ने खोज कर ली, कुछ और खोज कर ली। पृथ्वी पर और भी नए ग्रह पता कर लिए, आज ही एक news आ गई है। समझ आ रहा है? और भी नए अठारह ग्रह खोज लिए, न जाने क्या-क्या? ये सब चीजें बताती हैं कि आज के विज्ञान के पास में कोई भी fix इन ज्योतिष लोक की जानकारी कुछ भी नहीं है। कभी कुछ कहना, कभी कुछ कहना और खोजते ही रहना और एक galaxy है? कि असंख्यात galaxy हैं? कि कितने चन्द्रमा हैं? कितने सूर्य हैं? कोई confirmation किसी चीज की नहीं है। बस! चल रहा है! धक्का-पेल गाड़ी विज्ञान के नाम पर।

ज्योतिष लोक के बारे में जैन ग्रन्थों की सटीक गणितीय व्याख्याएँ

जबकि यहाँ आपको हर चीज व्यवस्थित समझाई जाएगी,

- असंख्यात द्वीप-समुद्रों का भी पूरा गणित है।
- हर चन्द्रमा के, सूर्य के विमानों के आकार का भी गणित है। कितने बड़े, कितने योजन, कितने कोश की वो विमानों की लम्बाईयाँ, चौड़ाईयाँ होती हैं? और

- इन सब गणित के साथ-साथ उन असंख्यातों की संख्या का भी पूरा का पूरा वर्णन आता है।

इतना व्यवस्थित वर्णन आपको कोई भी विज्ञान देने वाला नहीं है। विज्ञान तो हमेशा uncertainty के साथ ही चलता है। कुछ दिख गया, वह हो गया और जो नहीं दिखा, वह हो सकता है! कभी भविष्य में दिख गया तो कह दिया, नहीं दिखा तो अनुमान से बोल दिया तो भी वह विज्ञान के खाते में चढ़ जाता है। कोई वैज्ञानिक है, यदि वह अपने भी अनुमान से कुछ बोल देता है, तो भी वह विज्ञान ही कहलाता है। अगर वह अपने अनुमान से भी बोल देता है- हाँ! ऐसा होता है या हो सकता है या ऐसा है। अगर वैज्ञानिक ने बोल दिया, It means that is proved तो वह valid हो गया।

प्रामाणिक बातों को मानना ही, सम्यग्ज्ञान है।

इस तरीके के जो लोग बातें मानते हैं, ऐसी बातें मानने वाले लोग प्रामाणिक भी नहीं होते और उनकी बुद्धि भी बहुत अच्छी बुद्धि नहीं मानी जाती। क्योंकि जो किसी की भी बात का, कुछ भी विश्वास कर ले, वह लोगों का ज्ञान भी सम्यग्ज्ञान की कोटि में नहीं आता। आपको विश्वास करने के लिए भी कुछ होना चाहिए कि हम किसकी बात का विश्वास करें? विश्वास करने के लिए भी हेतु होते हैं और वे जो logic दिए जाते हैं, वह अकाट्य होते हैं। जो logic दिए जाते हैं, फिर वे बाद में किसी भी तरीके से differ नहीं होते हैं। उनमें कोई भी इस तरीके से कुछ पहले कहा था, बाद में कुछ कहने लगे, इस तरीके का जो difference आता है, यह बताता है कि आपके यहाँ कोई भी बात science में मतलब कोई भी certainty के साथ में कोई भी चीज होती ही नहीं है। science के according अगर हम कोई बात करते हैं तो वह तो यहाँ कुछ से कुछ समझ में आने वाली नहीं है। आप यह देखें कि जैसा जैन ऋषियों-मुनियों ने बताया है, वह बात जितनी science मान ले, समझ लो उतना ही अपने लिए वो science ठीक है। जितना न माना कोई बात नहीं, आप अपने ज्ञान में रखो कि कहाँ पर क्या है? कितना है? कितनी ऊँचाई पर क्या कुछ होता है? ये जानकारियाँ यदि आपको रहेंगी तो आपका दिमाग व्यवस्थित रहेगा, सम्यग्ज्ञान आपका बनेगा।

चित्रा भूमि से सात सौ नब्बे **(790)** योजन ऊपर तारों के विमान हैं**,** जो ज्योतिष देवों के विमानों में सबसे नीचे हैं।

आप देखें कि यहाँ से नहीं, सम पृथ्वी भाग से जब हम ऊपर चलते हैं तो आचार्यों ने लिखा है- सबसे पहले तारों के विमान आते हैं, जो सात सौ नब्बे(790) योजन ऊपर पहुँचने पर आते हैं। कितना? सबसे पहले क्या आएगा? ताराओं के विमान आएँगे। कहाँ से चलना है? अब आप अपनी भूमि को और मान लो, छह feet ऊँचा उठा लो कि दस feet ऊँचा उठा लो कि आपका जो है कहीं पर भूमि का उठाव बहुत ऊँचा है, कहीं पर नीचा है, तो कहाँ से माना जाएगा? इसका भी कोई माप-तोल तो होगा, कोई fix जगह तो होगी। समभूमि, समतल भूमि वह मानी जाएगी, जिसे हम कहते हैं- चित्रा भूमि। रत्नप्रभा पृथ्वी का जो पहला भाग है- चित्रा और दूसरा भाग है- वज्रा। ये दोनों ही भाग एक-एक हजार योजन मोटाई को लिए हुए हैं। जो आपको तीसरे अध्याय में बताया जा चुका है। उस चित्रा भूमि से हमें नापना है और वह चित्रा भूमि आपको कहाँ मिलेगी? सुन रहे हो न! चित्रा भूमि कहाँ मिलेगी? चित्रा भूमि! कहाँ से समझ में आएगी चित्रा भूमि हो रही है? अगर ऊपर से समझ में न आए तो फिर नीचे से समझने की कोशिश करो। मतलब कि चित्रा के नीचे वज्रा है, तो वज्रा भूमि से एक हजार योजन ऊपर आओ तो चित्रा मिल जाएगी। अब ऊपर से कितना नीचे जाओ? हमें क्या पता आप कितना ऊपर आकर बैठे हो? कहाँ से आपका level शुरू हो रहा है? कितना इसमें यहाँ पर मिट्टी का भराव है? कितनी किलोमीटर तक यहाँ पर क्या भरा हुआ है, हमें क्या पता? अपनी नाप-तोल तो fix है। चित्रा भूमि समतल भूमि है, समभाग है, वहाँ से चलो, आपको मिल जाए तो ठीक, नहीं मिल जाए तो आप किसी देव की सहायता ले लो। भैया! हमें चित्रा भूमि के पास ले चलो और वह भी सहायता न करे तो आप जब तक इन्तजार करो, खुद देव बन जाओ तो जब जाकर देख लेना। थोड़ा विश्वास कर लो! क्या बड़ी बात है? बात यह है कि चित्रा भूमि से ही समतल हो करके आपको लेकर के ऊपर सात सौ नब्बे(790) योजन पहुँचना है। अब एक बात का अन्दाजा इससे लगाया जा सकता है कि देखो! जब क्या होता है? यह छटवाँ काल आता है, सारी सृष्टि प्रलय और यह सब जो है तरह-तरह की विष वर्षा, खार वर्षा सब चीजें होती हैं। उस समय पर सब यहाँ की वनस्पति, मिट्टी, सब कुछ जो है मिट जाती है, जल जाती है। उस समय पर भी मतलब उसका प्रभाव एक हजार योजन तक जाता है। इतनी भूमि वहाँ की बेकार हो जाती है यानि कि इतना नीचे जाने के बाद में हमें चित्रा भूमि मिलेगी। आप यह अन्दाज लगाएँ कि चित्रा भूमि से यदि सात सौ नब्बे योजन कहा गया है, तो आप

समतल वहीं पर देखेंगे और वहीं से आपको नापना है, कोई अपनी कॉलोनियों से और अपने-अपने क्षेत्रों से नहीं नापना है।

एक महायोजन **=** दो हजार**(2000)** कोश

एक महा योजन में दो हजार(2000) कोश होते हैं। सुन रहे हो? और उस हिसाब से यदि हम इसके miles बनाते हैं तो अगर हम यहाँ तारों को जाकर के देखते हैं, सात सौ नब्बे योजन पर तो सात सौ नब्बे योजन के यदि आप miles बनाएँगे तो कितना बनेगा? यह miles जो है लगभग इकतीस लाख (31,60000 miles) बनेंगे। कितने? हाँ! कुछ something और हो सकता है लेकिन ये लगभग कितना? इकतीस लाख mile आएगा ये। और अगर आप इसकी किलोमीटर बनाएँगे तो 1.6 से इसको और multiply कर देना। यह आप इससे अन्दाज लगा सकते हैं। (31,60000 miles x 1.6 = 50 लाख 56 हजार km)

चित्रा भूमि से ज्योतिष्क देवों के विमानों की दूरी

- मतलब सात सौ नब्बे**(790)** योजन ऊपर पहुँचने के बाद में ताराओं का ज्योतिष मण्डल प्रारम्भ होता है।
- फिर आचार्य कहते हैं- ताराओं के बाद में सूर्य का मण्डल प्रारम्भ होता है। सूर्य के विमान, उससे भी जब हम दस(10) योजन ऊपर चलेंगे तो क्या मिलेंगे? सूर्य के विमान मतलब हम आठ सौ**(800)** योजन ऊपर पहुँच गए।
- उसके भी जब हम अस्सी(80) योजन ऊपर चलेंगे तब हमको मिलेगा चन्द्रमा के विमान। यानि यहाँ से हम आठ सौ अस्सी**(880)** योजन ऊपर पहुँच गए।

जैन दर्शन के अनुसार**,** चन्द्रमा के विमान की चित्रा भूमि से दूरी छप्पन लाख किलोमीटर है

आठ सौ अस्सी योजन में लगभग पैंतीस लाख मील हो जाएगा। (point कुछ और होगा, वह अलग matter है) लगभग कितना हो गया? पैंतीस लाख(35,20,000) मील और अगर इसके किलोमीटर बनाओगे तो something fifty-one (51) लाख किलोमीटर के कुछ आएगा। मतलब चन्द्रमा का विमान जैन गणित के अनुसार, जैन दर्शन के अनुसार, कितना बैठ रहा है? यहाँ से इक्यावन किलोमीटर। छप्पन बैठ जाएगा! चलो

भाई! इक्यावन नहीं छप्पन मान लो। कुछ भी उसी के something कुछ मान लो। पचास से ऊपर है, इतना पक्का है। छप्पन किसका बना लिया? हाँ! पैंतीस लाख का कुछ बनाओगे तो उसमें पैंतीस लाख तो मील हो गए। उसके किलोमीटर बना लो तो कितना आ गया? छप्पन लाख आ रहा है, कोई बात नहीं। अब आप यह देखो कि यह छप्पन (56) लाख 32 (हजार) किलोमीटर जाने पर, क्या मिला अपने को? चन्द्रमा के विमान मिले। अगर हम वर्तमान के विज्ञान से कोई तुलना करे तो वर्तमान का विज्ञान, कोई बताएगा, कितने किलोमीटर पर चन्द्रमा को मानता है? ज्यादा से ज्यादा एक तो ये भी देखोगे आप कि वर्तमान के विज्ञान में अलग-अलग देशों का विज्ञान अलग-अलग है। रूस कुछ अलग कहेगा, अमेरिका कुछ अलग कहेगा, जर्मनी कुछ अलग कहेगा, इटली कुछ अलग कहेगा, सबका अलग-अलग गणित है। कोई तीन लाख किलोमीटर मान रहा है, कोई पाँच लाख किलोमीटर मान रहा है, कोई बारह लाख किलोमीटर मान रहा है, कोई तेरह लाख किलोमीटर मान रहा है। यहीं पर सब समाप्त है, इससे ज्यादा कुछ नहीं है। पचास लाख, छप्पन लाख किलोमीटर तक कोई नहीं पहुँचा, कोई नहीं मानता।

Class 11

जैन दर्शन के अनुसार, सूर्य के विमान चन्द्रमा के विमानों की अपेक्षा पृथ्वी के निकट है; जबकि विज्ञान के अनुसार, चन्द्रमा पृथ्वी के निकट है।

सबसे बड़ी बात विपरीतता की यह है कि विज्ञान के अनुसार चन्द्रमा पहले है और सूर्य बाद में है और जो सूर्य बाद में है, तो वह बहुत बाद में है। चन्द्रमा की दूरी तो वे लाख किलोमीटर में नाप लेते हैं लेकिन सूर्य की दूरी तो करोड़ किलोमीटर में नापते हैं। सुन रहे हो? तेरह लाख, तेरह करोड़ किलोमीटर तक भी नापते हैं, देख लेना। मतलब कि इतना difference चन्द्रमा में लाख किलोमीटर पर जा रहा है, वह करोड़ किलोमीटर पर जा रहा है। इतना अगर difference आ रहा है, तो यह अपने आप में तुक्केबाजी के अलावा कुछ नहीं समझ में आता। समझ में आ रहा है? तुक्केबाजी जानते हो! हाँ! बस! फेंकने बाजी के अलावा कुछ समझ में नही आता। क्योंकि हम जब किसी भी दृष्टि से

देखते हैं तो जो अन्तर है, वह अगर हम जैन गणित के अनुसार देखे तो एक सीमित अन्तर fix अन्तर है और वह इसी अन्तर पर चलता है। चन्द्रमा पहले है, सूर्य बाद में है, यह तो science के अनुसार हो गया, चन्द्रमा पहले सूर्य बाद में है लेकिन जैन दर्शन के अनुसार सूर्य पहले है और चन्द्रमा बाद में है। इनके बीच में कोई difference है, तो वह ज्यादा नहीं है। केवल अस्सी योजन का difference है, उसको हम आसानी से समझ सकते हैं।

'पृथ्वी घूमती है' विज्ञान की यह धारणा भी जैन दर्शन के विपरीत है।
इस तरह का अगर कोई अन्तर हमारे देखने में आता है, तो उससे भी ये विपरीताएँ जो वर्तमान में चल रही हैं, क्या घूमता है? चन्द्रमा को स्थिर बना रखा है, सूर्य को स्थिर बना रखा है, पृथ्वी को घुमा रखा है। जबकि हर चीज हमारे लिए प्रत्यक्ष से स्पष्ट दिखाई देती है, पृथ्वी स्थिर होती है, चन्द्रमा और सूर्य ही हमें घूमते हुए दिखते हैं। लेकिन फिर भी हमें उल्टी बुद्धि science के नाम पर दी जाती है और हम उसे स्वीकार करते हैं। छोटी-सी कोई भी पृथ्वी की कल्पना करके उस पृथ्वी को गेंद के आकार का या globe के रूप में जैसा भी हमें दिखाया जाता है, उसके अनुसार हम उस पृथ्वी के angle, चन्द्रमा और सूर्य को fix करके पृथ्वी के angle बदल-बदल करके अपना mathematics निकालते रहते हैं। ये बातें जैन दर्शन के बिल्कुल विपरीत हैं क्योंकि आचार्य कहते हैं- पृथ्वी का घूमना कभी भी सम्भव नहीं है। पृथ्वी को कौन घुमाएगा? किससे घूम रही पृथ्वी? logic दो कुछ, कहाँ से घूम रही पृथ्वी? किसके कारण से घूम रही? कौन घुमाने वाला है? कुछ बताओ तो! हवा घुमा रही है? कौन घुमा रहा है? अगर हवा घुमा रही है, तो फिर हमें बताओ। तुम्हारी बात पकड़े फिर हम, अगर कुछ पढ़े-लिखे हो तो! हवा का घूमना है, तो फिर हवा तो हमेशा अपनी direction बदलती रहती है। कभी पूर्व से हवा चलती, कभी उत्तर से हवा चलती तो कभी पृथ्वी इधर घूमेंगी, कभी उधर घूमनी चाहिए। क्या घूमता है? कौन घुमाता है? अगर कोई पृथ्वी को और जिसकी भी speed बताई जाती है, लाखों किलोमीटर में उसकी जो है speed से घूम रही है, इतनी speed से अगर कोई चीज घूमेंगी तो उसके आश्रित रहने वाला जो जल होगा, समुद्र होगा, उनका पानी कहाँ जाएगा? जहाँ हम बैठे घूम रहे हैं, हमें तो वह चीज कभी घूमती दिखाई दे नहीं रही है और जो घूमता दिखाई दे रहा है, उसे आप जो है स्वीकार नहीं कर रहे हैं। किसी भी तरह का कोई भी science हो, हर व्यक्ति

को इस बात पर गौर करना चाहिए कि कोई भी अगर कुछ कहता है, तो उससे पहले हम उससे logic पूछें। कहने से मान लेना तो तब सम्भव है, जब कोई सर्वज्ञ बोल रहा हो तो चलो फिर भी ठीक है, अपने-अपने छोटे-छोटे मतिज्ञान से, श्रुतज्ञान से कोई भी तरीके की declaration करने वाले लोग, कितने प्रमाणिक हो सकते हैं? यह बात आपको कुछ न्याय ग्रन्थों को पढ़ने में समझ में आ पाएगी।

वक्ता की प्रमाणिकता से ही वाक्य की प्रमाणिकता होती है।
वक्ता की प्रमाणिकता होनी चाहिए। वक्ता के अन्दर इस तरीके का कोई प्रत्यक्ष ज्ञान होना चाहिए, सर्वज्ञता होनी चाहिए तब उस ज्ञान के ऊपर जो है, हमारा कोई trust बनता है। तब हम जाकर के उस ज्ञान को valid मानते हैं। अगर इस तरीके की कोई वक्ता की प्रमाणिकता नहीं है, तो ज्ञान की भी कोई प्रामाणिकता नहीं बैठती है।

आगे के ज्योतिष्क देवों के विमानों की स्थिति
आप यह ध्यान रखें कि जो यहाँ पर आपको चन्द्र, सूर्य और ये ताराओं की दूरियाँ बताई जा रही हैं, उसी के अनुसार आचार्य कहते हैं कि

- नक्षत्र भी उसके और ऊपर होते हैं। चार**(4)** योजन ऊपर और चलो तो आपको क्या मिल जाएँगे? नक्षत्र मिलेंगे।
- उसके और ऊपर अगर आप चार**(4)** योजन चलेंगे तो आपको बुध ग्रह के विमान मिल जाएँगे। ग्रह होते हैं न! बुध ग्रह!
- फिर उसके बाद में आएगा शुक्र ग्रह और उसके तीन**(3)** योजन ऊपर चलो, शुक्र ग्रह के विमान आ जाएँगे।
- उसके भी तीन**(3)** योजन और ऊपर चलो तो गुरु ग्रह के विमान आ जाएँगे।
- उसके भी तीन**(3)** योजन और ऊपर चलो तो मंगल ग्रह के विमान आ जाएँगे।
- और उसके भी तीन**(3)** योजन पर और चलोगे तो शनि ग्रह के विमान आ जाएँगे।

इस तरह से तारों से शुरू होकर के शनि ग्रह तक यह पूरा लगभग आप जोड़ेंगे तो कितना हो जाएगा? एक सौ दस**(110)** योजन का यह एक बिल्कुल स्थान हो जाएगा, पट्टी हो जाएगी।

चित्रा भूमि से सात सौ नब्बे(**790**) योजन से लेकर नौ सौ(**900**) योजन तक एक सौ दस(**110**) योजन के ऊँचाई तथा एक राजू प्रमाण व्यास के क्षेत्र में ज्योतिष्क देवों का निवास है।

सात सौ नब्बे(**790**) से शुरू हुई एक सौ दस योजन पर last हो गई मतलब नौ सौ(**900**) योजन पर ज्योतिर्मण्डल का समापन हो जाता है। लेकिन यह पट्टी जो एक सौ दस(**110**) योजन की है, ये पूरी आपको फैली हुई मिलेगी। कहाँ तक? द्वीप और समुद्रों के अन्त तक। अन्तिम स्वयंभूरमण समुद्र तक, ये चन्द्रमा, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, ताराओं के सब विमान फैले हुए हैं। आगे-आगे आपको बताया जाएगा कि कैसे, कहाँ पर, कौन मतलब स्थित होते हैं या घूमते हैं? इस बात की चर्चा बाद में होगी।

प्रत्येक देव के विमान में जिनालय आदि होते हैं।

लेकिन अभी यह समझना है कि ये विमानों की संख्या असंख्यात है, ये ज्योतिषी देव। इन चन्द्रमा, सूर्य आदि इन सब विमानों की जो यह संख्या है, इनमें जितने विमान हैं, हर एक विमान में जिनालय भी होते हैं। सब चीजें होती हैं- नृत्यशाला, रंगशाला, नाट्यशाला, सब तरीके के जो देवों के लिए आवश्यक सब चीजें जो होती हैं, वे सब इनके विमानों में उपलब्ध रहती हैं। इन देवों के इस तरीके के रहने के ये सब स्थान हैं।

देवों के विमानों को खींचने वाले भी देव हैं**,** जो विभिन्न आकृतियों को धारण किए होते हैं।

इनमें जो ये देव रहते हैं, इनके विमानों को खींचने वाले भी देव होते हैं। विमानों को खींचने वाले भी देव होते हैं। मतलब कि चारों दिशाओं में एक**-**एक विमान को खींचने में चार**-**चार हजार(**4000**) देव लगे होते हैं। किसके विमान को? मान लो

- चन्द्रमा का विमान है, तो उसके लिए भी सोलह हजार(**16,000**) देव खींच रहे हैं उस विमान को।
- सूर्य का विमान है, तो उसको भी सोलह हजार(**16,000**) देव खींच रहे हैं सूर्य के विमान को, बराबर, चार-चार हजार।

सूर्य**-**चन्द्र आदि के विमानों को खींचने वाले देवों की विभिन्न आकृतियाँ

यह भी बताया है कि उन विमानों में जो ये देव खींचते हैं, उन देवों की जो आकृति होती हैं, वह अलग-अलग होती हैं, अलग-अलग दिशाओं में यानि कि

- पूर्व दिशा में सिंह की आकृति वाले देव होंगे।
- दक्षिण दिशा में इधर देखोगे तो गज की आकृति वाले देव होंगे। गज मतलब हाथी।
- इधर पश्चिम दिशा में आपको वृषभ यानि बैल की आकृति वाले देव मिलेंगे और
- उत्तर दिशा में अश्व की आकृति वाले देव होते हैं।

ऐसे चार-चार हजार देव हर दिशा में यह चन्द्र और सूर्य के विमानों के लिए लगे रहते हैं।

ज्योतिष्क देवों के विमानों के गमन की वीथियाँ(गलियाँ) नियत**(fix)** हैं

कहाँ पर खींचते हैं? कहाँ चलते हैं? सब के लिए जो पथ है, वह बिल्कुल fix है। क्या समझ आ रहा है! जो रास्ते हैं, उनको वीथियाँ बोलते हैं, जिन्हें आप अपनी भाषा में गलियाँ बोलते हो। वे वीथियाँ fix हैं, उन्हीं fix track पर वे चलते हैं। वह track भी अगर उनका बदलता है, तो वैसे ही बदल जाता है, जैसे आपकी train जब पटरी पर चलती है, तो वह कब अपना track change कर लेती है, तो उसी के अनुसार जहाँ तक उसके track चलता है या turn होता है, उसी से वह अपना रास्ता बदल लेती है।

चन्द्र विमानों की पन्द्रह**(15)** वीथियाँ और सूर्य विमानों की एक सौ चौरासी**(184)** वीथियाँ हैं।

इसी तरीके से चन्द्रमा के लिए पन्द्रह(15) गलियाँ होती है। कितनी? पन्द्रह और सूर्य के विमान के गमन करने के लिए one eighty-four (184) वीथियाँ होती हैं, एक सौ चौरासी गलियाँ। आप देखते हो, जब चन्द्रमा का हम किसी भी तरीके से ज्योतिषी ज्ञान के अनुसार हम जो वर्णन करते हैं, वह चन्द्रमा की गति के अनुसार ही चलता है। आज भी भारतीय ज्योतिष चन्द्रमा की गति के अनुसार ही तिथियों का ज्ञान कराता है। आज भी भारतीय ज्योतिष में नक्षत्र और जो कोई भी योग निकाले जाते हैं, वह चन्द्रमा की, सूर्य की गति के अनुसार ही निकाले जाते हैं, पृथ्वी की गति के अनुसार नहीं निकलते। समझ आ रहा है? पूरा ज्योतिष fail हो जाएगा, अगर पृथ्वी घूम गई तो। पूरा का पूरा भारतीय ज्योतिष नहीं दुनिया का कोई भी विश्व का ज्योतिष होगा, अगर ज्योतिष है,

तो वह चन्द्र, सूर्य की संचार पर ही depend है। पूछ लेना किसी ज्योतिषाचार से जा करके कि आजकल कोई नया ज्योतिष पढ़ाया जाता हो? अभी तक नहीं बना है।

ज्योतिष ज्ञान हमें द्वादशांग वाणी से प्राप्त हुआ है।
यह ज्योतिष ही हमको बताता है कि इन ज्योतिष को भी अगर हम देखे तो यह भी ज्ञान हमें पूर्व और अंगों के जो यह शास्त्र है, उनसे ज्योतिष का ज्ञान मिला है। ज्योतिष का ज्ञान कहीं अलग से नहीं आया, यह ज्ञान मिथ्या नहीं होता। आज भी हमें ज्योतिष का ज्ञान इस तरीके से बिल्कुल गणित के अनुसार perfect मिलता है कि आज भी आप सौ वर्ष पहले का, दो सौ वर्ष पहले का, अगर दिन भी निकलोगे न, तारीख निकालोगे तो सब निकल आएगी। आगे आने वाले समय में भी अगर एक महीना बढ़ जाता है, कोई दिन, तिथियाँ बढ़ती हैं, घटती हैं, वह सब जो है आगे का भी calendar आपका पहले से बना हुआ है, सौ साल का भी आगे का। कोई भी चीज आप आज भी बैठे-बैठे यहाँ पर कि भाई! हम अगर बीस साल पहले कहीं थे और अगर आपको उसकी केवल तारीख याद है, तो वह तारीख से match करके आप तिथि निकाल सकते हो, उसका दिन निकाल सकते हो और वह बिल्कुल accurate आएगा। नहीं होता? जन्मपत्रियाँ मिलती हैं, इस तरीके के ज्योतिष ज्ञान को भी कहाँ से प्रमाणिक माना जाता है? ऋषियों-मुनियों के ज्ञान के कारण से ही वह ज्योतिष प्रमाणिक है और यह ज्योतिष की प्रामाणिकता भी इन जैन शास्त्रों में दी हुई है, इसलिए ज्योतिष प्रमाणिक अपने लिए आज भी है।

चन्द्रमा के परिभ्रमण से कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष
अगर चन्द्रमा का, सूर्य का आप परिभ्रमण देखेंगे तो चन्द्रमा में आपको कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष हमेशा, प्रतिदिन, निश्चित दर से उन दिनों का होना और चन्द्रमा की जो भी, उस चन्द्रमा की जो कला कहलाती है, उस कला का सोलहवाँ भाग ही प्रतिदिन घटेगा या बढ़ेगा। क्योंकि उस चन्द्रमा को पूरा बनने में पन्द्रह से सोलह दिन लगते हैं और फिर वह घटने में फिर वह उसी तरीके से घटता है।

- जब वह चन्द्रमा की कलाएँ घटती हैं तो वह क्या होता है? कृष्ण पक्ष कहलाता है।
- जब चन्द्रमा की कलाएँ बढ़ती हैं तो वह शुक्ल पक्ष कहलाता है।

चन्द्रमा की कलाएँ घटने-बढ़ने का कारण

अब ये कलाएँ क्यों घटती हैं, क्यों बढ़ती है? तो जैन आचार्यों ने बताया कि जहाँ पर चन्द्रमा का विमान है, उसी के ठीक नीचे राहु का विमान होता है। क्या सुन रहे हो? चन्द्रमा के विमान के नीचे राहु, राहु-केतु के नाम तो सुन रखे हैं न! तो ये सब कहाँ है? सूर्य के विमान के नीचे केतु है और चन्द्रमा के विमान के नीचे राहु का विमान है। ये भी इनके ज्योतिषी देवों के ही ये विमान हैं। राहु के विमान के ऊपर ध्वज दण्ड लगे होते हैं। ध्वज! हर विमानों के ऊपर ध्वज लगे होते हैं तो उनके उस ध्वज दण्ड से चार अंगुल ऊपर ही चन्द्रमा के विमान की निचली surface touch करती है। बस! केवल चार अंगुल का difference है चन्द्रमा के विमान में और उसके नीचे राहु के विमान में। समझ में आ रहा है? अब क्या होता है कि जब वह चन्द्रमा अपनी निश्चित गति से वह भी चल रहा है, उसके साथ-साथ राहु की भी गति है, तो वह पन्द्रह दिन में पहले तो वह उसको एक-एक कला मतलब सोलहवाँ अंश उसका ढकता हुआ, ढकता हुआ चला जाता है। यह हो गया कृष्ण पक्ष और जब उसको पूरा का पूरा ढक लेता है, तो वह क्या हो जाता है? वह उसकी अमावस्या आ गई। फिर क्या होता है? फिर उसकी गति फिर उल्टी शुरू हो जाती है, तो उसके माध्यम से एक-एक कला फिर घटती चली जाती है। पन्द्रह गलियों में उन्हीं गलियों में उसी के fixation के साथ में वह विमान उसके साथ में घूमेगा, जितना-जितना वह एक दिन में घूमेगा, उसमें अन्तर केवल एक कला का पड़ेगा। जब वह कला बढ़ने लग जाएगी तो वह शुक्ल पक्ष कहलाएगा। फिर बढ़ते-बढ़ते वह पूर्ण चन्द्रमा दिखने लगेगा तो वह राहु का विमान उसके नीचे इतना आ जाएगा कि वह उसकी जो निचली surface है, उसको वह दबा नहीं पाएगा। इस तरीके से यह जो अन्तर दोनों के भ्रमण के कारण से आता है, इसी से कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष बनते हैं।

Class 12

सूर्य-चन्द्रमा अनादि से हैं और हमेशा रहेंगें।

यह अनादि की व्यवस्था है। आप कह भले ही लो, दस हजार साल पहले से, एक लाख वर्ष पहले से, सृष्टि की रचना शुरू हुई। चन्द्रमा, सूर्य यह सब अनादि की व्यवस्था है

और इसी तरीके से चल रहे हैं। सबके अपने-अपने रास्ते बने हुए हैं, पन्द्रह गलियाँ चन्द्रमा की हैं और एक सौ चौरासी गलियाँ सूर्य की हैं और यह सब इसी तरीके के देवों के द्वारा इनका भ्रमण होता है।

अन्य ज्योतिष्क देवों के विमानों को खींचने वाले देवों की संख्या
इस प्रकार के भ्रमण में जब हम सूर्य, चन्द्रमा के अलावा ग्रहों की, नक्षत्रों की भी बात करें तो उन विमानों को जोतने वाले उनमें भी देव ही होते हैं।

- ग्रहों के लिए आठ हजार**(8000)** देव जोतने वाले होते हैं यानि दो-दो हजार चारों दिशाओं में लगा लेना।
- नक्षत्रों के लिए चार हजार**(4000)** देव जोतने वाले होते हैं और
- जो सामान्य ताराएँ होती हैं, जो छोटे-छोटे आपको ताराएँ दिखती हैं, इनमें भी दो हजार**(2000)** देव होते हैं। दो हजार देव इन ताराओं के विमानों को भी जोतने वाले होते हैं।

भोगभूमि के काल में सूर्य-चन्द्रमा दिखाई नहीं देते।
यह सब जिस तरीके से चल रहा है, वह अनादि काल से चल रहा है और ऐसा ही चलता रहेगा। आप चाहे कभी से शुरुआत माने, कभी अन्त कर ले, इसका कभी अन्त होने वाला नहीं। अगर यहाँ पर चन्द्रमा और सूर्य कभी नहीं भी दिखते हैं तो वह भोगभूमि का काल होगा। जब यहाँ पर कल्पवृक्षों का प्रकाश इतना होगा कि चन्द्र-सूर्य का प्रकाश भी हल्का पड़ जाएगा लेकिन कहीं चले नहीं जाएँगे, वे घूमेंगे वहीं, रहेंगे वहीं।

लवणसमुद्र से सम्बन्धित एक विचित्र एवं रोचक तथ्य
बड़ी विचित्रता है, सभी समुद्रों में एक लवण समुद्र, बड़ी अपनी विचित्रता रखता है। जम्बूद्वीप के जो बिल्कुल ही चारों ओर घेरा हुआ लवण समुद्र है। आप देखें कि शास्त्रों में लिखा है कि उसका जो पानी है, वह चौदह हजार(14,000) योजन, सोलह हजार(16,000) योजन तक ऊपर उठा हुआ है। मतलब कि ये तो कितने? नौ सौ योजन में दब गए यानि लवण समुद्र के पानी में यह सब घूम रहा है। मतलब कि लवण समुद्र के पानी में यह सब पूरा ज्योतर्मण्डल डूबा हुआ है। आपको तो बहुत ऊँचा लग रहा है। अब लवण समुद्र में जाकर देखो, लवण समुद्र का पानी इतना ऊँचा है। अपना ज्ञान

बहुत कम है, बहुत छोटा है, ज्ञान को इस ज्ञान के साथ में बढ़ाओ तब आपको लगेगा कि ज्ञान का विस्तार बहुत ज्यादा है और हमें जो दिखाई दे रहा है या science हमें जो बता रही है, उसमें कुछ भी जो है, उसकी कोई प्रामाणिकता नहीं है। यहाँ तो आचार्यों ने एक-एक चीज को fix कर रखा है कि अगर इन ज्योतिष मण्डलों में आपको बताया था न! कि यहाँ पर भी इन्द्र होंगे, प्रतीन्द्र होंगे और इनका भी अपना एक परिवार होता है।

ज्योतिष्क देवों के इन्द्र और उनका परिवार

यहाँ पर सबसे बड़ी विशेषता यह है वैसे तो आपको सूर्य बहुत प्रभाववान दिखाई देता है लेकिन चन्द्रमा इन्द्र के रूप में माना गया है। क्या कहा? हाँ! इन्द्र कौन है ज्योतिष मण्डल का? चन्द्रमा होता है और उस चन्द्रमा का परिवार होता है, तो एक चन्द्रमा के परिवार में

- एक सूर्य होता है। उसका परिवार जो होगा, उसमें कितने सूर्य होंगे? एक सूर्य होगा।
- अट्ठासी**(88)** उसमें ग्रह होंगे। eighty-eight उसमें ग्रह होते हैं। उन सब ग्रहों की संख्या सब शास्त्रों में ज्योतिषियों में जो लिखी है, वही जैन शास्त्रों में लिखी है। वे ग्रह भी कुछ जघन्य ग्रह माने जाते हैं, कुछ मध्यम होते हैं और कुछ उत्कृष्ट भी होते हैं।
- उसी प्रकार से नक्षत्र होते हैं। जो अट्ठाईस**(28)** नक्षत्र माने जाते हैं तो ये अट्ठाईस नक्षत्र उस चन्द्रमा के परिवार में fix हैं और इसके अलावा
- जो तारे आपको दिखाई देते हैं, वे छियासठ हजार नौ सौ पचहत्तर कोड़ा**-**कोड़ी **(66,975,0000000,0000000)** तारे एक चन्द्रमा के परिवार में होते हैं। कितने? छियासठ हजार नौ सौ पचहत्तर करोड़ into करोड़, इतने तारों का एक परिवार एक चन्द्रमा का है।

अतः एक चन्द्रमा के साथ कितनी चीजें हो गई? एक इन्द्र होगा, एक चन्द्रमा का परिवार होगा तो उसमें इतनी चीजें उसके साथ होंगी।

जम्बूद्वीप के दो चन्द्रमा और दो सूर्य का वर्णन एवं उनके परिभ्रमण की व्यवस्था

अगर हम आपसे कभी बात करें कि जम्बूद्वीप में दो चन्द्रमा होते हैं और दो सूर्य होते हैं तो आपको क्या समझना है? एक चन्द्रमा के साथ में एक सूर्य, अट्ठासी ग्रह, अट्ठाईस

नक्षत्र हैं तो दो चन्द्रमा के साथ में इससे दूने हो गए, अगर दोनों को मिलाएँगे तो अन्यथा उस चन्द्रमा का वह अपना परिवार अलग होगा। इतने ही उस चन्द्रमा सम्बन्धित तारे होंगे, छियासठ हजार नौ सौ पचहत्तर कोड़ाकोड़ी। जम्बूद्वीप में दो चन्द्रमा हैं, दो सूर्य हैं। कोई भी गली होती है, तो उस गली में यह एक चन्द्रमा, एक सूर्य जिस side होता है, उसकी दूसरी opposite side में उस समय पर दूसरा चन्द्रमा, दूसरा सूर्य होता है। इनका परिभ्रमण इस तरीके से होता है कि जो सूर्य आपको आज दिखाई देता है, दूसरे दिन वह दूसरा सूर्य आता है। तीसरे दिन फिर वही पहले दिन वाला सूर्य आएगा, चौथे दिन फिर दूसरे दिन वाला सूर्य आएगा और इस तरीके से rotation बिल्कुल continuous चलता रहता है। इसमें किसी भी तरीके का कोई disturbance न कभी हुआ, न होगा, इसको बोलते है- अनादिकालीन व्यवस्था।

ढाई द्वीप के चन्द्रमा एवं सूर्यों की संख्या

- जम्बूद्वीप में दो(2) चन्द्रमा हैं, दो सूर्य हैं।
- लवण समुद्र में चार(4) चन्द्रमा हैं, चार सूर्य हैं।
- धातकीखण्ड द्वीप में बारह(12) चन्द्रमा हैं, बारह सूर्य हैं।
- उसके आगे कालोदधि द्वीप समुद्र में बयालीस(42) चन्द्रमा हैं और बयालीस ही सूर्य हैं। और
- पुष्करार्ध द्वीप में बहत्तर(72) चन्द्रमा हैं और बहत्तर सूर्य हैं।

सब मिला करके ढाई द्वीप में आप देखोगे तो एक सौ बत्तीस(132) चन्द्रमा हैं और एक सौ बत्तीस ही सूर्य हैं। कितने में? अभी हम केवल ढाई द्वीप की बात कर रहे हैं। ढाई द्वीप के बाहर तो असंख्यात द्वीप हैं, असंख्यात समुद्र हैं। इन ढाई द्वीपों में इस तरीके से कहाँ-कहाँ पर वह चन्द्र-सूर्य आदि स्थित हैं? कहाँ अन्वस्थित हैं? इसकी बात बाद में करेंगे। आपको इतना ही समझना है कि इन चन्द्रमा-सूर्य आदिकों की जो गति है, वह अपनी निश्चित गति से ही भ्रमण करते हैं। जैसे चन्द्रमा की निश्चित गलियाँ हैं, ऐसे ही सूर्य की भी निश्चित गलियाँ हैं।

सूर्यग्रहण होने का कारण

जैसे चन्द्रमा के नीचे राहु पड़ता है, वैसे ही सूर्य के नीचे केतु पड़ता है। वह कभी-कभी जो सूर्यग्रहण के रूप में आपको दिखाई देता है, वह केतु के माध्यम से होता है। आपको क्या

लगता है कि सूर्य पर कोई आपत्ति आ गई है, सूर्य देवता क्या हो गया? नाराज हो गया। जबकि इस तरह का छह महीने में, वर्ष में एक बार उस गति के कारण से ऐसा हो जाता है कि केतु का विमान उसके सामने पूरा का पूरा आ जाता है, तो वह पूरा का पूरा ढक जाता है। इसी को बोलते हैं- सूर्यग्रहण। ये सब जो चीजें हैं, अपने-अपने तरीके से चल रही हैं और इन सब चीजों को अगर हम अपने इसी विश्वास के साथ लाएँगे, रखेंगे तो ही आपको ज्योतिष का सही ज्ञान होगा और तभी आप के लिए इस तरह से ज्योतिष मण्डल का, ज्योतिर्देवों का सही ज्ञान कहने में आएगा, यह ज्योतिषी देवों का विज्ञान है।

ज्योतिष्क देवों की ऊँचाई

अब ये ज्योतिषी देव जो आपके लिए यह भी समझ में आ सकता है, इनकी ऊँचाई भी शास्त्र में बताई गई है। कितने? सात(7) धनुष की इनकी ऊँचाई बताई गई है मतलब कि एक धनुष में चार हाथ मानो तो अट्ठाईस(28) हाथ की इनकी ऊँचाई होती है। इनकी किरणें भी fix हैं और जो हमें चन्द्रमा में शीतलता और सूर्य में आतप दिखाई देता है, उसके पीछे भी जो कारण है, वह भी ध्यान में रखने योग्य है।

सूर्य में प्रकाश और ऊष्मा का कारण

सूर्य के विमान के जो तल है, उस तल पर हमेशा एकेन्द्रिय पृथ्वीकायिक आतप नामकर्म के जीवों का उसमें जन्म होता रहता है। वे जीव ही ऐसे होते हैं, जो इस तरीके के आतप नामकर्म के कारण से उनकी जो यह प्रभा होती है, वह उष्ण होती है। उनकी जो किरणें निकलती हैं, कैसी होती हैं? ऊष्ण होती हैं। इसलिए उन जीवों के कारण से वह सूर्य की किरणें हमें उष्ण मिलती हैं।

चन्द्रमा में प्रकाश और शीतलता का कारण

चन्द्रमा में जो जीव उत्पन्न होते हैं उसके तल पर, वे उद्योत नामकर्म वाले जीव होते हैं, जिसके कारण से हमें उससे शीतलता की प्राप्ति होती है। जीवों की उत्पत्ति के कारण से यह हो रहा है।

सूर्य के सम्बन्ध में विज्ञान की धारणा का खण्डन

ऐसा नहीं समझना कि सूर्य का विमान है, तो बाहर तो इतनी आग लग रही है, इतना तेज है, तो भीतर भी आग लग रही होगी, कोई आग का गोला होगा। समझ आ रहा है? विज्ञान बताता रहता है, सूर्य की आग निरन्तर कम हो रही है, temperature down हो रहा है। इतने हजार वर्ष के बाद में गोला ठण्डा हो जाएगा। जैसे कि इतने हजार वर्ष के बाद विज्ञान भी बैठा रहेगा और तुम भी बैठे रहोगे देखने के लिए कब गोला ठण्डा हो रहा है। बस! ऐसी जो बातें करते हैं, इनकी कोई प्रमाणिकता तो है नहीं। जिसने कहा वह भी नहीं टिकने वाला, जो सुन रहा है वह भी नहीं टिकने वाला। कहने वाले ने कह दिया, सुनने वाले ने सुन लिया। अगर विश्वास आपने कर लिया तो आपका ज्ञान मिथ्या कहलाया और नहीं किया तो क्या कहलाया? सम्यक् कहलाया। अब आप सोच लो, आपको अपना ज्ञान सम्यक बनाना है कि मिथ्या बनाना है। बस इतनी-सी बात है और कुछ नहीं है। कोई भी ये अनादि की रचनाएँ, न कभी सूर्य के ताप में कमी होने वाली है, न सूर्य का गोला कभी ठण्डा होता है, न कभी चन्द्रमा का प्रकाश कभी कम होगा, ये सब स्वतः अकृत्रिम चीजें हैं, रचनाएँ हैं। जैसे जीवों का कभी अभाव नहीं होता संसार में, वैसे ही वहाँ पर भी जीवों की उत्पत्ति, उनका जन्म होना कभी भी रुकता नहीं। जैसे निगोद जीवों का कभी अभाव नहीं होता, वैसे ही उन आतप और उद्योत नामकर्म वाले जीव, सूर्य और चन्द्रमा के विमान में हमेशा उत्पन्न होते रहेंगे और मरते रहते हैं और उनके कारण से प्रकाश होता रहता है, ताप भी उत्पन्न होता रहता है।

शास्त्रों में, इनकी किरणें भी fix हैं। बारह हजार(12,000), बारह हजार किरणें बताई गई हैं। चन्द्रमा की भी बारह हजार किरणें होती हैं और सूर्य की भी बारह हजार किरणें बताई गई हैं। इस तरह की किरणों के साथ में ये सब अपना अलग-अलग तरीके का प्रकाश देते हैं, प्रताप देते हैं तो सूर्य का प्रकाश और प्रताप तो अपने लिए उष्णता देने वाला है जबकि चन्द्रमा का शीतलता देने वाला है और यह सब अकृत्रिम रूप से निरन्तर अनादि से चलता आ रहा है और चलता रहेगा। इस तरह का अपना ज्ञान बना कर रखो।

ज्योतिषी देवों का विशेष वर्णन तिलोयपण्णत्ति आदि ग्रन्थों में

यह ज्योतिषियों का एक सामान्य ज्ञान आपको दिया गया है, विशेष कुछ नहीं है। विशेष अगर आपको पढ़ना है, तो बड़े-बड़े जो ग्रन्थ हैं तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार उनमें देखना। मैंने तो अभी कुछ नहीं बताया आपको, सामान्य-सी बातें की, जो आपकी मोटी

बुद्धि में घुस जाएँ। हाँ! मोटी बुद्धि में। हाँ! अगर ज्यादा महीन बातें करेंगे गणित की पैनी, तब तो मोटी बुद्धि में कैसे घुसेंगी? मोटी बुद्धि में मोटी-मोटी बात ही घुस सकती हैं। इसलिए अगर आपकी बुद्धि और पैनी होने की इच्छा करती हो या आपको करना हो तो आप तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार आदि ग्रन्थों को पढ़ेंगे तो आपको पता पड़ेगा कि कितना विस्तार असंख्यात-संख्यात संख्या के साथ में आचार्यों ने गणित के रूप में अच्छे ढंग से कर रखा है। इतना ही आप इन ज्योतिषियों के बारे में आज जाने। कल कुछ विशेषताएँ और बची हैं, वे बताएँगे आपको।